जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान महावीरस्वामी निर्वाणोत्सव के अवसर पर सभी लेखकों, पाठकों एवं संवाददाताओं को हार्दिक शुभकामनायें !

वर्ष : 26, अंक : 14
अक्टूबर (द्वितीय) 2003

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

छठवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.): ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा अयोजित छठवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर दिनांक 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2003 तक अनेक सफलताओं के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: एवं रात्रि में प्रवचनसार के शुद्धोपयोग अधिकार पर हृदयग्राही मार्मिक प्रवचन हुए। प्रात: डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का लाभ उपस्थित समाज को मिला।

शिक्षण कक्षाओं में प्रतिदिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा छहढाला, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा अनेकान्त स्याद्वाद एवं क्रमबद्धपर्याय, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा पंचभाव, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा परमभाव प्रकाशक नयचक्र की कक्षा तथा पण्डित जितेन्द्रजी राठी द्वारा बालकक्षा ली गई।

सायंकालीन प्रथम प्रवचनों में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर की व्याख्यान माला में डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई, पण्डित कमलेशजी मौ, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन भोपाल, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ़, पण्डित सुनिलजी शास्त्री प्रतापगढ़, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री बण्ड़ा केविविध विषयों पर प्रवचन हुए।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 2 अक्टूबर 2003 को प्रात: श्री अशोककुमारजी चक्रेशकुमारजी कोलकाता ने किया। सभा की अध्यक्षता श्री अजितकुमारजी तोतूका ने की, मुख्य अतिथि श्री महावीरप्रसादजी सरावगी कोलकाता थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बालचन्दजी पाटनी कोलकाता, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन हुआ। तथा बालचन्दजी पाटनी एवं अजितकुमारजी तोतूका ने भी सभा को संबोधित किया। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने दिया। मंच का संचालन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

उद्घाटन समारोह के पूर्व बालचन्दजी सुरेशचन्दजी पाटनी कोलकाता परिवार द्वारा झण्डारोहण किया गया।

ज्ञातव्य है कि शिविर के **आमंत्रणकर्त्ता** स्व. राजमलजी पाटनी की स्मृति में श्रीमती रतनदेवी पाटनी एवं सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी कोलकाता, दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता तथा श्रीमती प्रेमाबाई धर्मपत्नी श्री शान्तिलालजी सर्राफ खिमलासा परिवार थे।

शिविर के मध्य नवीन प्रकाशित पुस्तकों में सत्य की खोज गुजराती, समयसार का सार, सम्यग्दर्शन, धर्म के दशलक्षण, तीर्थंकर भगवान महावीर, मैं कौन हूँ, मैं स्वयं भगवान हूँ, अहिंसा महावीर की दृष्टि में, शीलवान सुदर्शन, उपसर्गजयी सुकुमाल, जैन नर्सरी हिन्दी एवं अंग्रेजी नामक पुस्तकों का विमोचन किया गया।

ब्र.यशपालजी जैन द्वारा चलाये जा रहे **कण्ठ पाठ योजना** के अभियान में लगभग 90 लोगों ने भाग लेकर समयसार, नियमसार, नाटक समयसार, द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थसूत्र आदि अनेक ग्रन्थों को अपने कण्ठ का हार बनाया। सभी प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 11 अक्टूबर 2003 को **समापन समारोह** के अवसर पर अध्यक्ष के रूप में श्री जगनमलजी सेठी इम्फाल, मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री संतोषजी पाटनी वाशिम, श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता, श्री शान्तिलालजी सर्राफ खिमलासा एवं ताराचन्दजी सौगाणी मंचासीन थे।

सभा का संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने किया।

शिविर में सम्पूर्ण देश से पधारे लगभग 1100 मुमुक्षु भाई-बहिनों ने लाभ लिया। इस अवसर पर 23 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 1872 घण्टों के सी.डी. एवं ऑडियो कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

जैन तिथि दर्पण – 2004

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

22

मुख्य बात तो यह है कि भगवान आत्मा त्रैकालिक वस्तुरूप से तो पर्याय से भिन्न है, तथापि पर्यायार्थिकनय से उसका जो वस्तुस्वरूप है वह क्रमानुसार होता है, आगे पीछे नहीं, तब पुरूषार्थ कहाँ रहा? तथा पर्यायार्थिकनय से जो परिणमन क्रमानुसार होता है उसका निर्णय कब होगा?

पर्याय में रहकर पर्याय का निर्णय नहीं होता, ज्ञायकस्वभाव के लक्ष से क्रमबद्ध का निर्णय होता है और वही पुरूषार्थ है।

जो पर्याय होनी होगी वही होगी उसका निर्णय किसने किया? तो कहते हैं कि ह्न त्रैकालिक ज्ञायकस्वभाव का निर्णय जिसने किया है उसे जो होना होगा सो होगा ह्न ऐसा सच्चा निर्णय होता है।

जिसप्रकार शरीर के नाम में इतना लिप्त है कि घोर निद्रा में भी उसका नाम लो तो उठकर बैठ जाता है, उसीप्रकार आत्मा में इतना लिप्त हो कि मैं चैतन्य ज्ञायक ज्योतिस्वरूप हूँ। जिसे जिसकी लगन लगी हो, उसे स्वप्न में भी उसी की ही बात ध्यान आती है। हम तो आनंद और शुद्ध चैतन्यमय हैं। पुण्य और पाप हम नहीं है। हम व्यवहार से उसके ज्ञाता-दृष्टा हैं, वास्तव में तो ज्ञाता-दृष्टा भी नहीं है।

प्रश्न : सम्यक्त्व के लिये कब तक अभ्यास करें?

उत्तर : कब तक क्या करें ..! यही तो अभ्यास है, यही करना है। दूसरा कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। रात्रि में अवकाश मिले या दिन में समय मिले - ज्ञायक ज्योति में अपनी धारणा दृढ हुई हो तो मंथन उसी का चलता है। दिनभर यही तो करना है।

प्रश्न : अंतर में कैसे जायें वह बतलाइये ?

उत्तर : अंतर में उतरे तब अपनी आत्मा की प्राप्ति होती है। पर पदार्थों की महिमा माने और उनमें ममत्व बुद्धि रखे तो अंतर में नहीं जा सकता। प्रथम पर पदार्थों का माहात्म्य कम होना चाहिये, तभी अंतर में जा सकता है; किन्तु अटकने के स्थान बहुत होने से यह जीव कहीं न कहीं अटक ही जाता है। किसी प्रकार से संयोग की, राग की, क्षयोपशम की - ऐसे अन्य विषय की अधिकता रह जाती है तो आत्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अरे भाई ! तुझ जैसा धनवान तो कोई नहीं है, तेरे भीतर परमात्मा विराजमान है, इससे अधिक धनवानपना क्या होगा ? ऐसे परमात्मापने को सुनकर अन्तर से उल्लास आना चाहिये, उसकी लगन-धुन लगना चाहिये। उस परमात्मस्वरूप की सच्ची धुन लगे जो स्वरूप अन्तर में है तो वह प्रगट हुये बिना कैसे रहेगा ? वह तो अवश्य ही प्रगट होगा।

प्रश्न : पुरुषार्थ करने से पर्याय इधर-उधर हो जाती होगी?

उत्तर : मुख्यत: तो तुझे पुरूषार्थ की सूझ-बूझ नही है, इसलिये आपत्ति उठाता है। वास्तव में तो पूर्ण पर्याय ने जैसा जाना है वैसा ही यहाँ होता है ह्न ऐसा निर्णय कर ! वह पूर्ण पर्याय जहाँ से आयी है ऐसे शक्तिस्वभाव पर लक्ष जाता है तब मैं भी ऐसा सर्वज्ञस्वभावी हूँ ह्न ऐसी प्रतीति होती है।

पर्याय में मोक्ष तो स्वकाल में ही होता है ह्न ऐसा निर्णय करे तो उसकी दृष्टी ध्रुव पर ही जाती है और स्वभाव सन्मुखता का अनंत पुरूषार्थ आता है और तभी पर्याय के स्वकाल का सच्चा ज्ञान होता है। आत्मा के श्रद्धा-ज्ञान सम्यक् हुये उसमें तो कार्य हो ही रहा है, फिर जल्दी और देर का प्रश्न ही कहाँ है ?

अहो ! यह आत्मा सर्वज्ञस्वभावी ही है। जानना... जानना... जानना ही उसके अंतस्तल में भरा है; जिसके अस्तित्व में-सत्ता में यह शरीर-मन-वाणी विकल्पादि सब ज्ञात होते हैं, वह जाननेवाला तू है - ऐसा जान-विश्वास कर तथा कर्तृत्वबुद्धि छोड़ दे। **(क्रमश:)**

रविवारीय गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 21 सितम्बर, 2003 को **श्रावक की ग्यारह प्रतिमायें** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, बडागाँव तथा संचालन नीरज जैन, खडैरी ने किया। गोष्ठी के अन्त में सन्मति जैन, पिडावा एवं आशीष जैन, जबेरा को श्रेष्ठवक्ता के रूप में चुना गया।

पाठशाला का शुभारंभ

घिरौर-मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा की प्रेरणा से दैनिक पाठशाला का शुभारंभ किया गया। तथा इसके तुरन्त बाद पाठशाला निरीक्षण के लिये पधारे पण्डित संतोषजी साहू ने तीन दिवसीय प्रवचनादि विविध कार्यक्रमों द्वारा पाठशाला के कुशल संचालन के लिये उचित मार्गदर्शन दिये। **- पुष्पराज जैन**

निबन्ध प्रतियोगिता के विजेता पुरस्कृत

जयपुर : श्री दि. जैन महासमिति राजस्थान की ओरसे बापूनगर में आयोजित शाकाहार विषय की निबंध प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को श्री जैनेन्द्र कुमार जैन ने नकद राशी देकर सम्मानित किया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रविन्द्रकुमार काले, सम्भव जैन, अनिता मीणा एवं पद्मा जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की।

भारत के पश्चिमी उत्तरप्रदेश की धर्मनगरी सहारनपुर के

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब

कार्यक्रम स्थल : महावीर कॉलोनी (मंदिरजी के स

(मंगलवार, दिनांक 18 नवम्बर से

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि सहारनपुर नगर (उ.प्र.) में श्री दि. जै
प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है, जिसमें वीतराग शान्तमुद्रायुक्त मूलनायक
पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान की जायेंगी। महोत्सव के विधिनायक श्री 1008 नेमिना
कल्याणार्थ सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर पुण्यलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा
पण्डित प्रकाशचन्दजी जैन, ज्योतिर्विद, मैनपुरी
पण्डित देवचन्दजी जैन, सहारनपुर
पण्डित उत्तमचन्दजी जैन, सहारनपुर

प्रतिष्ठाचार्य

बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री,
(खनियांधाना-म.प्र.)

निर्देशक

बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री,
(सनावद-म.प्र.)

सह-निर्देशक

पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया, अलीगढ़

श्री 1008 दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्स

अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	स्वागताध्यक्ष	उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष
पं. कैलाशचन्द जैन अलीगढ़	मुकेश जैन ठेकेदार 9837002203	संदीपकुमार जैन 9837068241	राम मोहन जैन सर्राफ 0132-2640477	अभिनन्दनकुमार जैन 0132-2613489 देवेन्द्रकुमार जैन सर्राफ	मुकेश जैन सर्राफ 9837166552 विमल जैन सर्राफ 0132-2640783

आयोजक : श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द परमागम मन्दिर ट्रस्ट (रजि

डॉ. जे.डी. जैन (अध्यक्ष), **प्रमोदकुमार जैन** (मंत्री), **राजकुमार जैन** (कोषाध्यक्ष), **मामचन्द जैन**

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल, सहारनपुर एवं अखिल भारतीय जैन यु

नोट – कृपया इस विज्ञापन को जहाँ से स

श्री दि. जैन 24 तीर्थंकर जिनालय एवं परमागम मंदिर पर

व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

मनेवाला पार्क), चिलकाना रोड, सहारनपुर (उ.प्र.)

सोमवार, 24 नवम्बर 2003 तक)

न 24 तीर्थंकर जिनालय एवं परमागम मंदिर में श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक श्री 1008 आदिनाथ भगवान एवं 24 तीर्थंकर भगवान की अन्तर्मुखी भाववाही मनोज्ञ प्रतिमायें थ भगवान होंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निज ें।

मंगल आशीर्वाद एवं सान्निध्य

.पू.108 आचार्य श्री धर्मभूषणजी महाराज

मुख्य परामर्शदाता

श्री पवनकुमार जैन
मंगलायतन, अलीगढ़

सांस्कृतिक निर्देशिका

श्रीमती वीना जैन, देहरादून

व समिति

मंत्री
जीवकुमार जैन
32-2659857
ॉ. सुशील जैन
32-2643769

कोषाध्यक्ष
अनुजकुमार जैन
9412114713
सह कोषाध्यक्ष
दिनेशकुमार जैन
0132-2659986

मुख्य-संयोजक
आदर्शकुमार जैन
0132-2648722
संयोजक
विनयकुमार जैन
0132-2728384

जे.), सहारनपुर (उ.प्र.)
(मुख्य संयोजक)

युवा फैडरेशन, सहारनपुर (उ.प्र.)

मांगलिक कार्यक्रम

18 नवम्बर -	झण्डारोहण, मंगल कलश शोभायात्रा, शांतिजाप, जिनेन्द्र पूजन, शास्त्र प्रवचन, इन्द्रप्रतिष्ठाविधि, प्रतिष्ठा मण्डप व मंच का उद्घाटन, याग मण्डल विधान, इन्द्रसभा-राजसभा, मंगल कलश स्थापना।
19 नवम्बर -	**गर्भ कल्याणक -** घटयात्रा, माता के 16 स्वप्नों का प्रदर्शन, जिनमंदिर में वेदी-कलश-शिखर शुद्धि, माता व अष्ट देवियों की तत्त्वचर्चा।
20 नवम्बर -	**जन्मकल्याणक** का विशाल जुलूस, जन्माभिषेक, इन्द्र-राजसभा, ताण्डव नृत्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम।
21 नवम्बर -	श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान, पालना-झूलन, राज दरबार।
22 नवम्बर -	**तपकल्याणक** - दीक्षा महोत्सव शोभायात्रा, श्री नेमिकुमार की बारात, दीक्षा-विधि, वैराग्य प्रवचन।
23 नवम्बर -	**ज्ञानकल्याणक**- मुनि नेमिनाथ का आहार, वनगमन, प्राण-प्रतिष्ठा, समवशरण रचना व दिव्यध्वनि प्रसारण।
24 नवम्बर -	**मोक्षकल्याणक** - गिरनार पर्वत की रचना, जिनमंदिर में श्रीजी विराजमान, कलशारोहण, शांतियज्ञ आदि।

ब देख सकें, ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 77

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

जीव कभी बदलकर अजीव नहीं होता और एक समय भी कभी बदले बिना रहता नहीं है।

कोई कहे कि यदि एक समय भी बदले बिना नहीं रहता है, तो नरक में जायेगा कि स्वर्ग में ?

पाप करेगा, खोटी संगति में पड़ेगा तो नरक में जायेगा और अच्छी संगति में रहेगा तो स्वर्ग जायेगा। अथवा स्वर्ग जानेवालों की संगति में रहने से वे स्वर्ग ले जायेंगे। नरक जानेवालों की संगति में रहने से वे नरक ले जायेंगे – ऐसा नही है; क्योंकि वह द्रव्य फिर स्वतंत्रा नहीं रहा।

जाना होगा का अर्थ यह भी नहीं है कि उसकी इच्छा होगी तो स्वर्ग जायेगा; क्योंकि फिर तो इच्छा के अधीन वह द्रव्य हो जायेगा। जबकि इच्छा भी तो विकार है, पर है। हमने तो उसमें निर्मल पर्यायों को सम्मिलित किया है, विकारी पर्याय को नहीं। विकारी पर्याय को तो पर में घोषित किया है।

छहढाला में भी कहा है –

वर्णादि अरु रागादि तैं निजभाव को न्यारा किया।

यदि कहो कि इच्छा के अधीन नहीं रखना तो फिर स्वतंत्रा तो तभी कहलायेगा जब ऐसा कहे कि जब हम चाहे तो प्रवचन में आए, जब नहीं चाहें तो प्रवचन में नहीं आए।

ऐसा नहीं है; क्योंकि चाह के अधीन हो जाना भी परतंत्राता है, स्वतंत्राता नहीं। चाह तो विकार है, पर है। यदि चाह के अधीन हुए तो पर के ही अधीन हुए।

तुम इसकी चिंता मत करो कि कैसे बदले या क्या करें; क्योंकि अनंतकाल पहले से ही प्रत्येक द्रव्य के बदलने का एक सुनिश्चित क्रम है। उस क्रम के अनुसार ही प्रतिसमय परिवर्तन होता है। इसप्रकार प्रतिसमय बदलकर ही तुम बिलकुल नहीं बदलोगे।

यह सब जीवों के परिणमन के बारे में तो है ही तथा सभी अजीवों के परिणमन के बारे में भी है।

इसप्रकार यहाँ दो द्रव्यों की भिन्नता और उनके परिवर्तन को बड़ी गहराई से स्थापित किया है।

परिवर्तन तो द्रव्यों का स्वभाव है और स्वभाव तो उसे ही कहते हैं जो पर से निरपेक्ष हो। उसमें यदि पर की अपेक्षा हुई, वह पर के अनुसार ही बदला तो फिर यह तो अनंत पराधीनता हो गई।

किसी को अध्यक्ष बनने के लिए कहा गया और कहा गया कि इतने बजे हम आयेंगे और आपको ले जावेंगे, तो वह समझता है कि मैंने इसके माथे पर भार लाद दिया और मैं आजाद हो गया कि मुझे स्वयं नहीं जाना पड़ेगा, अपितु मुझे लेने आयेंगे।

वे साहब निश्चित समय पर तैयार होकर खड़े हो जाते हैं और दो घंटे तक कोई लेने नहीं आता है। यदि उसने ऐसा कह दिया होता कि मुझे लेने आना नहीं, यदि मुझे अनुकूलता होगी तो मैं स्वयं आ जाऊँगा। तब तो वह स्वाधीन हो जाता। उसके बाद यदि जाता तो ठीक, नहीं जाता तो ठीक।

वह ऐसा समझता है कि मैंने इसे बांध लिया। दूसरों को बांधने–वाला पहले स्वयं बंधता है।

जैसे आपने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा कि अब तुम कहीं नहीं जा सकते, तो मैंने कहा आप भी तो नहीं जा सकते।

आपने मुझे पकड़ कर रोका है तो आप भी तो स्वयं रुके हैं। जब तक आप मुझे रोके रहेंगे, तबतक आपका रुकना भी अनिवार्य है। यदि मुझे कहीं जाना होगा तो आपको मुझे ले जाना पड़ेगा और आपको कहीं जाना हुआ तो मुझे छोड़कर जाना होगा, तो आप बताओ कि ज्यादा कौन बंधन में है मैं या आप ?

एक चोर को पकड़कर चार पुलिसवाले बैठे हैं तो वह चोर बंधा है या पुलिसवाले ?

जगत को दिखता है कि चोर बंधा है; लेकिन पुलिसवाले भी बंधे हैं; क्योंकि वे कहीं नहीं जा सकते हैं और वे आठ घंटे में थककर चकनाचूर हो जाते है। फिर पुलिस वालों की ड्यूटी बदल जाती है और दूसरे चार पुलिसवाले आते हैं; इसप्रकार चौबीस घंटे में बारह पुलिसवाले आते हैं और थक जाते हैं; लेकिन वह चोर आराम से लेटा रहता है। जब सोना होता है, तब सोता है; जब जागना होता है, तब जागता है। इसप्रकार चोर नहीं, पुलिसवाले बंधे हैं।

इसप्रकार बांधनेवाला बंधता है।

अरे भाईसाहब ! दो द्रव्यों के बीच में बंधन का कोई सवाल ही नहीं है। वे तो अपने नियमित परिणामों के अनुसार सुनिश्चित रूप से बदलेंगे। दुनिया की कोई ताकत उसे नहीं बदल सकती। जैसा कि कार्तिकेयानुप्रेक्षा में लिखा है कि –

जं जस्स जम्मि देसे जेण विहाणेण जम्मि कालम्मि।
णादं जिणेण णियदं जम्मं वा अहव मरणं वा।।321।।
तं तस्स तम्मि देसे तेण विहाणेण तम्मि कालम्मि।
को सक्कदि वारेदुं इंदो वा तह जिणिंदो वा।।322।।

जिस जीव का, जिस देश में, जिस काल में, जिस विधान से, जो जन्म अथवा मरण जिनदेव ने नियतरूप से जाना है; उस जीव का, उसी देश में, उसी काल में, उसी विधान से, वह अवश्य होता है। उसे इन्द्र अथवा जिनेन्द्र कौन टालने में समर्थ है ? अर्थात् उसे कोई नहीं टाल सकता।

इन्दो वा जिणिंदो वा में इन्द्र व जिनेन्द्र की जोड़ी छन्द के अनुरोध से नहीं बनाई, अपितु कोई कहे कि जिनेन्द्र भगवान या तीर्थंकर तो अनन्तवीर्य के धनी होते हैं, वे तो पलट देंगे; इसलिए कहा – जिनेन्द्र भगवान नहीं पलट सकते। (क्रमशः)

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये ये 25 प्रवचन **समयसार का सार** नामक 400 पृष्ठिय पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक 25/–रुपये में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर से प्राप्त की जा सकती है।

जैन तिथि दर्पण – 2004

शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. मुंबई : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुंबई के तत्त्वावधान में अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जवेरी बाजार मुंबई द्वारा श्रीमती कैलाशबेन विनोदचन्द्र रायचन्द्र शाह परिवार के सहयोग से द्वितीय त्रिदिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 26 सितम्बर से 28 सितम्बर 2003 तक विशेष उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पण्डित शैलेशभाई शाह तलोद, पण्डित रजनीभाईजी दोशी हिम्मतनगर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर के दौरान प्रात: गुरूदेवश्री के सी. डी. प्रवचन के अतिरीक्त दोनों समय छह प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। समापन समारोह में मुकुंदभाई खारा ने सभा को संबोधित किया, श्री प्रदीपजी खारा ने फैडरेशन की गतिविधियों की जानकारी दी तथा चेअरमेन श्री वीनूभाई ने आभार प्रदर्शन किया। संचालन श्री उल्लासभाई ने किया। **– भरतभाई शाह**

2. लूणदा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर तथा श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल लूणदा द्वारा आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़ के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। अन्त में आजाददेवी धर्मपत्नी श्री तेजसिंहजी पितलिया के 31 उपवास के उपलक्ष पंचपरमेष्ठी का विधान का आयोजन पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, रहली द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुल 5200 रूपये की राशि साहित्य की कीमत कम करने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद !

3. कूण(राज.): यहाँ दिनांक 26 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2003 तक श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा आयोजित चल शिक्षण-शिविर में पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़ के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दोपहर में द्रव्य-गुण-पर्याय पर कक्षा ली गई। शिविर में जवाहरलालजी लालावत का सहयोग रहा।

डॉ. भारिल्ल को बधाई !

जयपुर, जैनदर्शन के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को राजस्थान विश्वविद्यालय का सीनेटर नियुक्त किया गया है; एतदर्थ आपको हार्दिक शुभकामनायें।

आगामी कार्यक्रम .....

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का दिसम्बर माह में होने वाला राष्ट्रीय अधिवेशन इस वर्ष सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्रोणगिरि, छतरपुर द्वारा आयोजित किया जा रहा है; जिसके विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। **– प्रबंधक, अ.भा.जैन युवा फैड.**

शोकसभा आयोजित

1. राजस्थान के राज्यपाल स्व. श्री निर्मलचन्दजी जैन जबलपुर के निधन पर दिनांक 8 अक्टूबर 2003 को रात्रि में शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, श्री सम्पतकुमार गदैया एवं जैन समाज के विशिष्ट व्यक्तियों के अतिरिक्त जबलपुर से पधारे श्री निर्मलचन्दजी जैन के परिजनों ने भी अपने संस्मरण सुनाये। सभा का संचालन पवन बज ने किया।

आपके चिर-वियोग से पूरे देश से पधारे शिविरार्थी शोक संतप्त थे।

2. श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हरकचन्दजी बिलाला, अकोला का दिनांक 11 अक्टूबर, 03 को प्रात: देहावसान हो गया। आप जैनदर्शन के अच्छे मर्मज्ञ विद्वान थे।

3. श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक पण्डित यशवंतजी जैन (छाजेड़) खैरागढ़ का 29 सितम्बर, 03 को देहावसान हो गया है। आप बचपन से ही अपनी बहिन ब्र.जमनाबेन के साथ पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में रहते थे। आप कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली में प्रवचनकार एवं विधानाचार्य के रूप में 10 वर्ष तक सेवायें देते रहे।

4. श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन (कागजी) का दिल्ली में 5 अक्टूबर को देहावसान हो गया। आप तत्त्वलाभ लेने हेतु टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में ही रहा करते थे। आपका विद्यार्थियों के प्रति सदैव स्नेहभाव रहता था।

5. श्रीमती भँवरीदेवी घीसालालजी छाबड़ा सीकरवालों का दिनांक 27 सितम्बर, 03 को स्वर्गवास हो गया। आप भी टोडरमलस्मारक भवन के पास ही तत्त्वलाभ लेने हेतु रहा करतीं थी। स्मारक ट्रस्ट से चलनेवाली सभी गतिविधियों में आपका सदैव योगदान रहता था।

6. अहमदाबाद निवासी श्री ताराचन्द भाई माणेकचन्द खानी का दिनांक 18 सितम्बर, 03 को न्यूजर्सी-अमेरिका में देहावसान हो गया है। आपने अष्टपाहुड ग्रन्थ का गुजराती भाषा में अनुवाद किया है। आप गुरूददेवश्री के परम प्रशंसक तथा तत्त्वज्ञान के गहन अभ्यासी थे।

उक्त सभी के स्वर्गवास पर टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर श्रद्धांजली सभा आयोजित कर भावपूर्ण श्रद्धांजली दी गई।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अक्टूबर (द्वितीय) 2003
J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127